



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्पादक पत्र का नाम
दैनिक अखबार

दिनांक
३०. ९. २२

पृष्ठ संख्या
३

कॉलम
६४

अच्छे स्वास्थ्य व प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए मोटा अनाज उगाएँ : वीसी

भास्तर न्यूज़ | हिसार



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि भावी पीढ़ियों के बेहतर स्वास्थ्य तथा प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रूप से संरक्षित करने के लिए वर्तमान कृषि स्वरूप व खेती की पद्धतियों में फैसला और प्रकृति के अनुकूल व्यापक बदलाव की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय के सम्म विज्ञान विभाग के महान् गिल्टेस (मोटा अनाज) आवारित प्रदर्शनी स्टॉटो व शोध केंद्र का अवलोकन करने के दौरान उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोष से जहां एक तरफ हमारी प्रकृति व वातावरण में असामान्य बदलाव

एचएसू के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज अनुसंधान क्षेत्र में मोटे अनाज की फसलों का अवलोकन करते हुए।

दिखाइ दे रहा है कि दूसरी ओर लगातार कृषि रसायनों व खाद्यों के प्रयोग से हमारे खाद्यान जहर युक्त होते जा रहे हैं। इसका परिणाम है कि हर आयु के व्यक्तियों और पशुओं में तरह तरह की भयानक बीमारियां उत्पन्न हो रही हैं जो इस धरती पर मानव जीवन के अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा है।

कुलपति ने कहा इस स्थिति से बचने के लिए वर्तमान फसल चक्रों में बदलाव करके नए फसल विविधकरण के लिए सुमारी परम्परागत प्राचीन मोटे व छोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी, सावंक, छोटी कंगनी, कूटकी आदि को उन अपनाना होगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाप्ति पत्र का नाम
दीर्घभूमि

दिनांक
३०.७.२२

पृष्ठ संख्या
१

कॉलम
५-४

माइनर मिल्लेट्स आधारित प्रदर्शनी प्लाटों व शोध क्षेत्र का अवलोकन

अच्छे स्वास्थ्य के लिए किसान मोटा अनाज उगाएँ : प्रो. काम्बोज

हरियाणा न्यूज़ | हिसार



हिसार। अनुसंधान क्षेत्र में मोटे अनाज की फसलों का अवलोकन करते कुलपति प्रो. दीर्घभूमि।

फोटो: हरियाणा

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. दीर्घभूमि ने कहा कि भावी पीढ़ियों के बेहतर स्वास्थ्य तथा प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रूप से संरक्षित करने के लिए वर्तमान कृषि स्वरूप व खेती की पद्धतियों में मौसम और प्रकृति के अनुकूल व्यापक बदलाव करने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय के स्वयं विज्ञान विभाग के माइनर मिल्लेट्स (मोटा अनाज) आधारित प्रदर्शनी प्लाटों व शोध क्षेत्र का अवलोकन करने के दौरान उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से जहां एक ओर हवारी प्रकृति व बातावरण में असामान्य बदलाव दिखाइ दे रहा है वहीं दूसरी ओर लगातार कृषि रसायनों व खाद्यों के प्रयोग से हवारे स्थान जहर युक्त होते जा रहे हैं। इसी का परिणाम है कि लर आयु के व्यक्तियों और पशुओं में भयावह बीमारियां उत्पन्न हो रही हैं जोकि इस धरती पर मानव जीवन के अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा है।

कुलपति ने कहा इस स्थिति से बचने के लिए वर्तमान फसल चक्रों में बदलाव करके नए फसल विविधकरण के लिए हमारी परम्परागत प्राचीन मोटे तथा छोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, राधी, कंगनी, सारंक, लौटी कंगनी, कुटकी आदि को पुनः अपनाना होगा। जहां एक ओर ये छोटे व मोटे अनाज वाली फसलों कम पानी तथा थोड़े दिन में तैयार हो जाती हैं। वहीं यह

मोटे अनाज के राह है स्वास्थ्यवर्धक गुण

इस अवकाश पर कृषि विश्वविद्यालय के अधिकारी डॉ. पर्सके पानूज तथा सरय देहाविक डॉ. एकें दाता ने कहा कि अधिकारी मिल्लेट्स पानी की कमी व शुक्र क्षेत्रों में उच्च तापमान की अवस्था में अल्पी से उगाए जा सकते हैं। उन्होंने यहां राती (फिलर मिल्लेट) कैरिशमा व पोटेबिलम का उपयोग बोलतारीबां उत्तीत है वहीं चेला (प्रोटी बिल्लेट) और कुटकी (लिंटिल बिल्लेट) रिटाइल वी-६, कालगारस, फालकर तथा एक्सिल वाइट के गरमपूर रुप हैं। कल्पी (फालसाटल बिल्लेट) हाजारी प्राचीन फसलों में से पका है तथा इसमें ग्रीटा केरीबिल, दिल्लिया और बिल्किल तथा पुरुर जाता में पाप जाते हैं। यह विद्यालय तेज़ प्रगति और नवीनता निर्माताओं के लिए लाभप्रद है।

वर्ष 2023 अन्तरराष्ट्रीय मिल्लेट वर्ष घोषित

प्रो. काम्बोज ने कहा कि वैश्विक स्तर पर इस मिल्लेट फसलों के महत्व व मर्यादा को देखते हुए केंद्र सरकार के विदेशी पर संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा वर्ष 2023 को अन्तरराष्ट्रीय मिल्लेट वर्ष घोषित किया है जोकि उम्म आदमी की इक गोटे तथा छोटे अनाज वाली फसलों (मिल्लेट्स) के प्रति प्रेरित करने में कारबन होगा। इस दीर्घाल उद्घाटन दैशिकियों से विभिन्न प्रकार के मिल्लेट वाली सामाजिक उत्पादनों व इकठ्ठे प्रबन्धन के बारे में विस्तार से वर्णी की तथा इस विषय पर विस्तृत शोध करने के लिए प्रेरित किया।

कीटाणुगोधी होने के साथ पोषक तत्वों में भी भरपूर होती हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

प्रमाणित पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
मैनक जागरण	३०.९.२२	३	२-६

वातावरण में असामान्य बदलाव से उत्पन्न हो रहीं बीमारियां

जगरण संबद्धाता, हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज वारवार को सर्व विज्ञान विभाग के माइनर मिल्लेट्स (मोटा अनाज) आधारित प्रदर्शनी प्लाटों व शोध क्षेत्र का निरीक्षण करने पहुंचे।

वहाँ उन्होंने बताया कि वातावरण में असामान्य बदलाव से इंसानों और पशुओं में गंभीर बीमारियां पनप रही हैं। दूसरी ओर लगातार कृषि रसायनों व खाद्यों के प्रयोग से हमारे खाद्यान जहर युक्त होते जा रहे हैं। यह स्थिति मानव जीवन के अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा है।

इस स्थिति से बचने के लिए वर्षानान फसल चढ़ों में बदलाव करके नए फसल विविधिकरण के लिए हमारी परम्परागत प्राचीन मोटे व छोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वरी, बाजरा, रागी, कंगनी, सावक, छोटी रोथों होने के साथ साध पोषक तत्वों



अनुसन्धान क्षेत्र में मोटे अनाज की फसलों का अपलेक्षण करते कुलपति प्रो. बीआर कांबोज। उन्होंने मोटे अनाज की दोगांश अपनाने का आह्वान किया। पीआरओ

कंगनी, कुटकी आदि को देखाया में भी भरपूर होती है। अपनाना होगा। जहाँ एक ओर ये संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2023 छोटे व मोटे अनाज वाली फसलों को अंतर्राष्ट्रीय मिल्लेट वर्ष कम पानी व थोड़े दिन में तैयार हो किया थोड़ित प्रो. कांबोज ने कहा कि मानव तात्पर्य के लिए तापमान की अवस्था में आसानी से उगाये जा सकते हैं। उन्होंने कला रागी (फिंगर

मिल्लेट) कैलिंगम व पोटेशियम का सबसे बेहतरीन फ्रॉट हैं वही चेना (प्रोसो मिल्लेट) और कुटकी (लिटिल मिल्लेट) विटामिन बी-६, फास्फोरस, फ़ाइबर तथा एमिनो एसिड से भरपूर होते हैं। कंगनी (फॉकस्टेल मिल्लेट) हमारी प्राचीन फसलों में से एक है तथा इसमें बीटा केरोटिन, विटामिन और खनिज तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। यह विशेष तौर पर बच्चों और गर्भवती महिलाओं के लिए लाभप्रद है। कोहो मिल्लेट औषधीय गुणों से भरपूर है और यह कान और वित्त दोष को शांत करता है तथा इसमें बैक्टीरिया व जलन रोधी गुण होने के कारण लाभप्रद है। इसको खून शोधक व तंत्रिका तंत्र को मजबूत रखने के लिए भी प्रयोग में लिया जाता है। इनके अतिरिक्त सावंत व हरी कंगनी भी पोषिक होने के साथ औषधीय गुणों से भरपूर हैं।

मोटे अनाज के यह है स्वास्थ्यवर्धक गुण। इस अवसर पर कुपि महाविद्यालय के अधिकारी डा. एसके पाहुजा व सर्व वैज्ञानिक डा. एक डाक्तार ने कहा कि अधिकतर मिल्लेटस पानी की कमी व शुष्क क्षेत्रों में उच्च तापमान की अवस्था में आसानी से उगाये जा सकते हैं। उन्होंने कला रागी (फिंगर



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अभ्यु उजाला	३०. ९. २२	३	३५

संसाधनों को संरक्षित करने के लिए खेती की पद्धतियों में बदलाव की जरूरत : प्रो. कांबोज

माइक्रोस्टी रिपोर्टर

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के कुलपति प्रो. वीआर. कांबोज ने कहा कि भावी पैदियों के बेहतर स्वास्थ्य तथा प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रूप से संरक्षित करने के लिए खेती की पद्धतियों में व्यापक बदलाव की आवश्यकता है।

विश्वविद्यालय के सभ्य विज्ञान विभाग के माइनर मिल्लेट्स (मोटा अनाज) आधारित प्रदर्शनी प्लाटों व शोध क्षेत्र का अवलोकन करने के दौरान उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अल्पाधिक दोहन से बातावरण में असामान्य बदलाव दिखाई दे रहा है। दूसरी ओर लगातार कृषि रसायन व खाद के प्रयोग से हमारे खाद्यान जहर युक्त होते जा रहे हैं। हर आयु के व्यक्तियों और पशुओं में तरह-तरह की भयानक बीमारियाँ

उत्पन्न हो रही हैं। इस स्थिति से बचने के लिए वर्तमान फसल चक्रों में बदलाव करके नए फसल विविधकरण हेतु हमारी परंपरागत प्राचीन मोटे व छोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, गोमी, कंगनी, मावंक, छोटी कंगनी, कुटक्के आदि को पुनः अपनाना होगा।

उन्होंने कहा कि वैश्वक स्तर पर इन मिल्लेट्स फसलों के महत्व व भविष्य को देखते हुए भारत सरकार के निवेदन पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने आगामी वर्ष 2023 को 'अंतरराष्ट्रीय मिल्लेट वर्ष' घोषित किया है।

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा व सभ्य वैज्ञानिक डॉ. एके डाका ने कहा कि गणी (फिंगर मिल्लेट) कैलिशयम व पोटाशियम का सबसे बेहतरीन ज्ञात है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सभस्त्र दृष्टिपणा	29.09.2022	--	--

अच्छे स्वास्थ्य व प्राकृतिक संसाधनों के सरक्षण हेतु मोटा अनाज उगाएं किसान : प्रो. बी.आर. काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यूज़

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि भाली पांडियों के बेहतर स्वास्थ्य तथा प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रूप से सरोकृत करने के लिए वर्तमान कृषि स्वरूप व खेतों की पढ़ावियों में मीसम और प्रकृति के अनुकूल व्यापक बदलाव करने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय के सभ्य विज्ञान विभाग के माइनर मिलेट्स (मोटा अनाज) आधारित प्रदर्शनी प्लाटों व शोध शेत्र का अवलोकन करने के दौरान उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अधिक दौहन से जहाँ एक ओर हमारी प्रकृति व वातावरण में असामान्य बदलाव दिखाई दे रहा है वहाँ दूसरी ओर सागरातर कृषि रसायनों व खाद्यों के प्रयोग से हमारे खाद्यान जहर युक्त होते जा रहे हैं। इसी का परिणाम है कि हर आमु के छाकियों और पशुओं में तरह तरह की भावानक बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं जोकि इस अवधी पर मानव जीवन के अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा है। कूलपति ने कहा इस स्थिति से बचने के लिए वर्तमान फसल बछों में बदलाव करके नए फसल विविधकरण हेतु हमारी परम्परागत प्राचीन मोटे व लोटे अनाज बाली फसलों जैसे न्यार, बाजरा, राणी, कंगनी, सावंक, लोटी कंगनी, कुटकी आदि को पुनः अपनाना होगा। जहाँ एक ओर ये लोटे व मोटे अनाज बाली फसलें कम पानी व थोड़े दिन में तैयार हो जाती हैं वहाँ दूसरी तरफ ये कीटाणु रोधी होने के साथ साथ पोषक तत्वों में भी भरपूर होती है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2023 को 'अन्तर्राष्ट्रीय मिलेट



बर्ष' किया घोषित

प्रो. काम्बोज ने कहा वैधिक स्तर पर इन मिलेट्स फसलों के महत्व व भवित्व को देखते हुए भारत सरकार के निवेदन एवं संयुक्त राष्ट्र संघ ने आगामी वर्ष 2023 को 'अन्तर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष' घोषित किया है जोकि आम आदमी को इन मोटे तथा लोटे अनाज बाली फसलों (मिलेट्स) के प्रति प्रेरित करने में कारण साबित होगा। इस दौरान उन्होंने बैज्ञानिकों से विभिन्न प्रकार के माइनर मिलेट्स की संभावित सभ्य कियोंगों व इनके प्रसंस्करण के बारे में विस्तार से जारी की तथा इस विषय पर अधिक से अधिक ज्ञान देने के लिए प्रेरित किया।

मोटे अनाज के यह हैं स्वास्थ्यवर्धक गुण

इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. एस. के. पाहुजा व सभ्य वैज्ञानिक डॉ. ए. के. द्वाका ने कहा कि अधिकारी मिलेट्स पानी की कमी व शुष्क क्षेत्रों में उच्च

तापमान की अवस्था में आसानी से उगाये जा सकते हैं। उन्होंने कहा सारी (फिंगर मिलेट) फैलावाम व पोटेशियम का सबसे बेहतरीन स्त्रोत है वहीं चेना (प्रोसो मिलेट) और कुटकी (लिटिल मिलेट) विटामिन बी-6, फास्कोटस, फाइबर तथा एपिनो परिस्त द्वारा भरपूर होते हैं। कंगनी (फाइस्टेल मिलेट) हमारी प्राचीन फसलों में से एक है तथा इसमें बीटा केरोटिन, विटामिन और खनिज तत्व प्रधार मात्रा में पाए जाते हैं। यह विशेष तौर पर बच्चों और गर्भवती महिलाओं के लिए लाभप्रद है। कोहो मिलेट औषधीय गुणों से भरपूर है और यह कफ और पित्त दोष को सांत करता है तथा इसमें बैक्टीरिया व जलन रोधी गुण होने के कारण लाभप्रद है। इसको खून शोधक व तंत्रिका तंत्र को मजबूत रखने हेतु भी प्रयोग में लिया जाता है। इनके अतिरिक्त सार्वकामी व हीरी कंगनी भी पोषक होने के साथ औषधीय गुणों से भरपूर हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्मुखार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
निर० १२०२२	29.09.2022	--	--

अच्छे स्वास्थ्य के लिए मोटा अनाज उगाएं किसान : वीडी



चिंगाग टाइम्स चूज

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ची. आर. काम्बोज ने कहा कि भावी चालियों के बेहतर स्वास्थ्य तथा प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रूप से संरक्षित करने के लिए वर्तमान कृषि स्वरूप व खेती की पद्धतियों में मीमांसा और प्रकृति के अनुकूल व्यापक बदलाव करने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय के सभ्य विज्ञान विभाग के माहनर मिलेटस (मोटा अनाज) आधारित प्रदर्शनी प्लाटों व शोध क्षेत्र का अवलोकन करने के दौरान उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से जहाँ एक ओर हमारी प्रकृति व बातावरण में असामान्य बदलाव दिखाई दे

मोटे अनाज में हैं ये स्वास्थ्यवर्धक गुण

इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. एस. के. पाहुजा व सभ्य वैज्ञानिक डॉ. ए. के. दाका ने कहा कि अधिकतर मिलेटस पानी की कमी व शुष्क क्षेत्रों में उच्च तापमान की अवस्था में आसानी से उगाये जा सकते हैं। उन्होंने कहा गांव (फिंगर मिलेट) कैलियाम व योटेशियम का सबसे बेहतरीन स्रोत है वहाँ चेना (प्रोसेस मिलेट) और कुटकी (लिटिल मिलेट) विटामिन बी-६, फास्कोरस, फाइबर तथा एमिनो एसिड से भरपूर होते हैं। कंगनी (फार्मसेटिल मिलेट) हमारी प्राचीन फसलों में से एक है तथा इसमें बोटा केरोटिन, विटामिन और खनिज तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। यह विशेष तौर पर बच्चों और गर्भवती महिलाओं के लिए लाभप्रद है। कोटो मिलेट औषधीय गुणों से भरपूर है और यह कफ और पित दोष को शांत करता है तथा इसमें बैक्टीरिया व जलन रोधी गुण होने के कारण लाभप्रद है। इसको खून शोधक व तंत्रिका तंत्र को मजबूत रखने हेतु भी प्रयोग में लिया जाता है। इनके अतिरिक्त सावंक व हरी कंगनी भी पोषिक होने के साथ औषधीय गुणों से भरपूर हैं।

रहा है वहाँ दूसरी ओर लगातार कृषि रसायनों व खादों करके नए फसल विविधिकरण हेतु हमारी परम्परागत के प्रयोग से हमारे खाद्यान जहर युक्त होते जा रहे हैं। प्राचीन मोटे व छोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, आदि को पुनः अपनाना होगा। जहाँ एक ओर ये छोटे इसी का परिणाम है कि हर आयु के व्यक्तिओं और बाजरा, राणी, कंगनी, सावंक, छोटी कंगनी, कुटकी पशुओं में तरह तरह की भयानक बीमारियाँ उत्पन्न हो आदि को पुनः अपनाना होगा। जहाँ एक ओर ये छोटे रही हैं जोकि इस धरती पर मानव जीवन के असित्त व मोटे अनाज वाली फसलें कम पानी व बोढ़े दिन में के लिए गंभीर खतरा है। कुलपति ने कहा इस स्थिति तैयार हो जाती है वहाँ दूसरी तरफ ये कौटाणु रोधी होने से बचने के लिए वर्तमान फसल चक्रों में बदलाव के साथ साथ पोषक तत्वों में भी भरपूर होती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
न्यूज़	29.09.2022	--	--

अच्छे स्वास्थ्य व प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु मोटा अनाज उगाएं किसानः प्रो. बी.आर. काम्बोज

हांसी क्रांति न्यूज़

हिसार, : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि भावी पीढ़ियों के बेहतर स्वास्थ्य तथा प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रूप से संरक्षित करने के लिए वर्तमान कृषि स्वरूप व खेती की पद्धतियों में मौसम और प्रकृति के अनुकूल व्यापक बदलाव करने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय के सभ्य विज्ञान विभाग के माइनर मिलेटस (मोटा अनाज) आधारित प्रदर्शनी प्लाटों व शोध क्षेत्र का अवलोकन करने के दौरान उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अद्वृत्यधिक दोहन से जहाँ एक ओर हमारी प्रकृति व वातावरण में असामान्य बदलाव दिखाई



दे रहा है वहीं दूसरी ओर लगातार कृषि रसायनों व खादों के प्रयोग से हमारे खाद्यान जहर युक्त होते जा रहे हैं। इसी का परिणाम है कि हर आयु के व्यक्तियों और पशुओं में तरह तरह की भयानक बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं जोकि इस धरती पर मानव जीवन के अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा है। कुलपति ने कहा इस स्थिति से बचने के लिए वर्तमान फसल चक्रों में बदलाव करके

नए फसल विविधिकरण हेतु हमारी परम्परागत प्राचीन मोटे व छोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी, सावंक, छोटी कंगनी, कुटकी आदि को पुनः अपनाना होगा। जहाँ एक ओर ये छोटे व मोटे अनाज वाली फसलें कम पानी व थोड़े दिन में तैयार हो जाती हैं वहीं दूसरी तरफ ये कीटाणु रोधी होने के साथ साथ पोषक तत्वों में भी भरपूर होती हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम
पंजाब कुसरी

दिनांक
३०. ९. २२

पृष्ठ संख्या
२

कॉलम
३-६

अच्छे स्वास्थ्य व प्राकृतिक संसाधन संरक्षण के लिए मोटा अनाज उगाएं किसान : कुलपति

हिसार, २९ सितम्बर (ब्यूरो) :
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डॉ. आर. काम्बोज ने कहा कि भावी पीड़ियों के बेहतर स्वास्थ्य तथा प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रूप से संरक्षित करने के लिए बहुमान कृषि स्वरूप व खेती की पद्धतियों में मौसम और प्रकृति के अनुकूल व्यापक बदलाव करने की आवश्यकता है।

विश्वविद्यालय के सभ्य विज्ञान विभाग के माइनर मिगेटस (मोटा अनाज) आधारित प्रदर्शनी प्लाटों व सोध क्षेत्र का अवलोकन करने के दौरान कुलपति ने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से जहाँ एक और हमारी प्रकृति व वातावरण में असामान्य बदलाव दिखाई दे रहा है, वहीं दूसरी ओर लगातार कृषि रसायनों व खाद्यों के प्रयोग से हमारे खाद्यन जहर युक्त होते जा रहे हैं। इसी का परिणाम है कि हर आयु के



अनुसंधान क्लेट में मोटे अनाज की फसलों का अवलोकन करते कुलपति प्रो. डॉ. आर. काम्बोज।

व्यक्तियों और पशुओं में तरह तरह की भवानक चोमारियां उत्पन्न हो रही हैं, जोकि इस धरती पर मानव जीवन के अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा है।

कुलपति ने कहा इस स्थिति से बचने के लिए बहुमान फसल चक्रों में बदलाव करके नए फसल विविधकरण हेतु हमारी परम्परागत प्राचीन मोटे व छोटे अनाज वाली

फसलों जैसे ज्वार, बाचरा, रागी, कंगनी, सावंक, छोटी कंगनी, कुटकी आदि को पुनः अपनाना होगा। जहाँ एक ओर ये छोटे व मोटे अनाज वाली फसलें कम पानी व धोड़े दिन में तैयार हो जाती हैं, वहीं दूसरी तरफ ये कीटाणु रोधी होने के साथ-साथ पोषक तत्वों में भी भरपूर होती हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2023 को 'अन्तर्राष्ट्रीय मिगेट वर्ष' किया घोषित

प्रो. काम्बोज ने कहा वैश्विक मान पर इन मिलेट्स फसलों के महत्व व भविष्य को देखते हुए भारत सरकार के निवेदन पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने आगामी वर्ष 2023 को 'अन्तर्राष्ट्रीय मिगेट वर्ष' घोषित किया है, जोकि आम आदमी को इन मोटे तथा छोटे अनाज वाली फसलों (मिगेट्स) के प्रति प्रेरित करने में कामगर सहायता होगा।

इस दौरान उन्होंने वैज्ञानिकों से विभिन्न प्रकार के माइनर मिलेट्स की समावित सभ्य क्रियाओं व इनके प्रसंस्करण के बारे में विस्तार से चर्चा की तथा इस विषय पर अधिक से अधिक शोध करने के लिए प्रेरित किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नम्भ द्वीरु	29.09.2022	--	--

‘बच्चों और गर्भवती महिलाओं के लिए लाभप्रद है कंगनी’

नम्भ-छोर न्यूज ॥ 29 सितंबर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कलापति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि भावी पीढ़ियों के बेहतर स्वास्थ्य तथा प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रूप से संरक्षित करने के लिए वर्तमान कृषि स्वरूप व खेती की पद्धतियों में मौसम और प्रकृति के अनुकूल व्यापक बदलाव करने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय के शस्य विज्ञान विभाग के माइनर मिल्लेट्स (मोटा अनाज) पर आधारित प्रदर्शनी का अवलोकन करने के दौरान उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से जहाँ एक ओर हमारी प्रकृति व वातावरण में असामान्य बदलाव दिखाई दे रहा है वहीं दूसरी ओर लगातार कृषि रसायनों व खादों के प्रयोग से हमारे खाद्यान

जहर युक्त होते जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि इसी का परिणाम है कि हर आयु के व्यक्तियों और पशुओं में तरह-तरह की बयानक बीमारियां उत्पन्न हो रही हैं जोकि इस धरती पर मानव जीवन के अस्तित्व के लिए मंभीर खतरा है। कुलपति ने कहा इस स्थिति से बचने के लिए वर्तमान फसल चक्रों में बदलाव करके नए फसल विविधकरण हेतु हमारी परम्परागत प्राचीन मोटे व छोटे अनाज वाली फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी, सावंक, छोटी कंगनी, कुटकी आदि को पुनः अपनाना होगा। इस अवसर पर कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा व सस्य वैज्ञानिक डॉ. एके ढाका ने कहा कि अधिकतर मिल्लेट्स यानी की कमी व शुष्क क्षेत्रों में उच्च तापमान की अवस्था में

आसानी से उगाये जा सकते हैं। उन्होंने कहा रागी (फिंगर मिल्लेट) कैलिश्यम व पोटेशियम का सबसे बेहतरीन स्रोत है वहीं चेना (प्रोसो मिल्लेट) और कुटकी (लिटिल मिल्लेट) विटामिन बी-6, फास्फोरस, फाइबर तथा एमिनो एसिड से भरपूर होते हैं। कंगनी (फॉक्सटेल मिल्लेट) हमारी प्राचीन फसलों में से एक है तथा इसमें बीटा केरोटिन, विटामिन और खनिज तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। यह विशेष तौर पर बच्चों और गर्भवती महिलाओं के लिए लाभप्रद है। कोडो मिल्लेट औषधीय गुणों से भरपूर है और यह कफ और पित्त दोष को शात करता है तथा इसमें बैक्टीरिया व जलन रोधी गुण होने के कारण लाभप्रद है। इसको खून शोधक व तंत्रिका तंत्र को मजबूत रखने हेतु भी प्रयोग में लिया जाता है।